INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

IRJMSH

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

पंचपरगनिया कहानी 'पाराइसचित' में किन्नर विमर्श : अस्मिता, संघर्ष और सामाजिक बहिष्करण

Dr. Basudev Mahto

Assistant Professor, Department of Panchpargania
P. P. K. College, Bundu
Ranchi University, Ranchi, Jharkhand
Email: drbasudevmahto@gmail.com

सारांश

समकालीन साहित्य में किन्नर विमर्श हाशिये पर स्थित समुदायों की अस्मिता, सामाजिक स्वीकार्यता और मानवीय अधिकारों से जुड़े प्रश्नों को अभिव्यक्ति देने वाला महत्त्वपूर्ण विमर्श है। भारतीय समाज में किन्नर समुदाय की उपस्थिति प्राचीन काल से रही है, किंतु सामाजिक संरचना में उसे लंबे समय तक उपेक्षा, भेदभाव और रूढ़िगत धारणाओं का सामना करना पड़ा है। साहित्य ने इस समुदाय के जीवनानुभवों, संघर्षों और सामाजिक बहिष्करण को अभिव्यक्ति देकर उसकी मानवीय अस्मिता के प्रश्न को व्यापक सामाजिक चेतना से जोड़ने का कार्य किया है।

पंचपरगनिया साहित्य में संतोष साहु 'प्रीतम' की कहानी **'पाराइसचित'** इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। यह कहानी उनके कहानी–संग्रह चिती साँप में संकलित है। कहानी में **चंपा, चमेली, तारा** और **कमला** जैसे किन्नर पात्रों के माध्यम से किन्नर समुदाय के जीवन, आजीविका, पारस्परिक संबंध, सामाजिक उपेक्षा और संघर्ष को चित्रित किया गया है। इनमें चंपा कथा के केंद्र में है, जिसके जीवन से लेकर मृत्यु तक समाज की रूढ़िगत मानसिकता और भेदभावपूर्ण व्यवहार विभिन्न स्तरों पर सामने आते हैं। विशेषतः उसकी मृत्यु के बाद अंतिम संस्कार को लेकर उत्पन्न सामाजिक विवाद किन्नर व्यक्ति की मानवीय गरिमा और समानता के प्रश्न को अत्यंत संवेदनशील रूप में उपस्थित करता है। कहानी का अंत रूढ़ सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन की संभावना और मानवीय संवेदना के विकास की ओर संकेत करता है। प्रस्तुत आलेख में 'पाराइसचित' के आधार पर किन्नर अस्मिता, जीवन–संघर्ष, सामाजिक बहिष्करण तथा मानवीय गरिमा के प्रश्नों का विश्लेषण किया गया है।

बीज शब्द : पंचपरगनिया कहानी, पाराइसचित, किन्नर विमर्श, किन्नर अस्मिता, सामाजिक बहिष्करण, मानवीय गरिमा, सामाजिक चेतना।

1. प्रस्तावना

साहित्य समाज और मानव जीवन के विविध अनुभवों को अभिव्यक्त करने का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। समाज में अनेक ऐसे समुदाय रहे हैं, जिन्हें लंबे समय तक समान अवसर, सम्मान और सामाजिक स्वीकृति नहीं मिल सकी। किन्नर समुदाय भी इनमें से एक है। समाज में किन्नरों को प्रायः उनकी मानवीय संवेदना और व्यक्तित्व से अधिक उनकी लैंगिक पहचान के आधार पर देखा जाता रहा है। इसके कारण उन्हें उपेक्षा, भेदभाव, सामाजिक दूरी और कई प्रकार की रूढ़िगत धारणाओं का सामना करना पड़ता है। साहित्य ऐसे समुदायों के जीवन और संघर्ष को सामने लाकर न केवल उनकी पीड़ा को अभिव्यक्त करता है, बल्कि समाज की भेदभावपूर्ण मानसिकता पर भी प्रश्न उठाता है।

भारतीय समाज में किन्नर समुदाय की उपस्थिति लंबे समय से रही है, लेकिन आधुनिक समय में उनकी पहचान, समानता और अधिकारों का प्रश्न विशेष रूप से सामने आया है। इस दिशा में भारत के सर्वोच्च न्यायालय का वर्ष 2014 का *National Legal Services Authority v. Union of India* (NALSA) निर्णय अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इस निर्णय में सर्वोच्च न्यायालय ने ट्रांसजेंडर व्यक्तियों की लैंगिक पहचान को मान्यता देते हुए उनके समानता, स्वतंत्रता और गरिमा से जुड़े संवैधानिक अधिकारों को स्वीकार किया।[1] इसके बाद Transgender Persons (Protection of Rights) Act, 2019 के माध्यम से ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के साथ शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सेवा तथा सार्वजनिक सुविधाओं आदि क्षेत्रों में भेदभाव को रोकने के लिए कानूनी प्रावधान किए गए।[2] इन संवैधानिक और कानूनी प्रयासों ने किन्नर समुदाय के अधिकारों को एक मजबूत आधार दिया है, किंतु सामाजिक व्यवहार और मानसिकता के स्तर पर समानता तथा स्वीकार्यता का प्रश्न आज भी महत्त्वपूर्ण बना हुआ है।

साहित्य में किन्नर जीवन का चित्रण इस सामाजिक यथार्थ को मानवीय दृष्टि से समझने का अवसर देता है। किन्नर विमर्श केवल उनकी लैंगिक पहचान की चर्चा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उनकी अस्मिता, सम्मान, सामाजिक स्वीकृति, आजीविका, संघर्ष और मानवीय गरिमा जैसे प्रश्नों से भी जुड़ा हुआ है। इसलिए किसी साहित्यिक रचना में किन्नर पात्रों का अध्ययन करते समय यह देखना आवश्यक है कि समाज उनके साथ किस प्रकार का व्यवहार करता है और रचनाकार उनके जीवन–अनुभवों तथा संघर्षों को किस रूप में प्रस्तुत करता है।

पंचपरगनिया आधुनिक कहानी–साहित्य में भी समाज और जीवन से जुड़े विभिन्न विषयों को अभिव्यक्ति मिली है। संतोष साहु 'प्रीतम' की कहानी 'पाराइसचित' उनके आधुनिक पंचपरगनिया कहानी–संग्रह चिती साँप में संकलित है, जिसका प्रथम संस्करण वर्ष 2014 में प्रकाशित हुआ। यह संग्रह की तीसरी कहानी है और पुस्तक के पृष्ठ 25 से 36 तक संकलित है।[3] कहानी में **चंपा, चमेली, तारा** और **कमला** चार किन्नर पात्रों के माध्यम से किन्नर समुदाय के जीवन, आपसी संबंध और समाज के साथ उनके संबंधों को सामने लाया गया है। इनमें चंपा

कहानी का केंद्रीय पात्र है। उसके जीवन और मृत्यु से जुड़ी घटनाओं के माध्यम से कहानी किन्नर व्यक्ति के प्रति समाज की सोच और व्यवहार को गंभीरता से सामने लाती है।

'पाराइसचित' की विशेषता यह है कि इसमें किन्नर जीवन को केवल करुणा के विषय के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है। कहानी उनके सामाजिक अस्तित्व और मानवीय सम्मान से जुड़े प्रश्नों को भी उठाती है। विशेष रूप से चंपा की मृत्यु के बाद उत्पन्न परिस्थितियाँ यह सोचने के लिए बाध्य करती हैं कि क्या लैंगिक भिन्नता के कारण किसी मनुष्य को मृत्यु के बाद भी सामाजिक भेदभाव का सामना करना चाहिए। इस प्रकार कहानी किन्नर समुदाय के जीवन–संघर्ष और सामाजिक बहिष्करण को सामने लाने के साथ मानवीय संवेदना तथा सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता की ओर भी संकेत करती है। प्रस्तुत अध्ययन मूलतः **पाठ–विश्लेषणात्मक पद्धति** पर आधारित है, जिसमें 'पाराइसचित' के प्रमुख पात्रों और प्रसंगों के माध्यम से किन्नर अस्मिता, संघर्ष और सामाजिक बहिष्करण का विश्लेषण किया गया है।

2. किन्नर विमर्श : अवधारणा एवं सामाजिक संदर्भ

भारतीय समाज में किन्नर समुदाय की एक विशिष्ट सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान रही है। सामान्यतः स्त्री और पुरुष के आधार पर निर्मित सामाजिक व्यवस्था में किन्नर समुदाय को लंबे समय तक अलग दृष्टि से देखा जाता रहा है। उनकी लैंगिक पहचान के कारण उन्हें परिवार और समाज में उपेक्षा, भेदभाव तथा अस्वीकार जैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ा है। ऐसे में किन्नर विमर्श उनके जीवन, पहचान, अधिकार, सामाजिक स्थिति और संघर्ष को समझने तथा उन्हें मानवीय गरिमा के साथ देखने का प्रयास करता है।

किन्नर समुदाय के सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन पर मानवशास्त्री सेरेना नंदा (Serena Nanda) का अध्ययन महत्त्वपूर्ण माना जाता है। उनकी पुस्तक Neither Man Nor Woman: The Hijras of India में भारतीय हिजड़ा समुदाय का मानवशास्त्रीय अध्ययन करते हुए उनकी विशिष्ट लैंगिक पहचान, सामुदायिक जीवन, धार्मिक–सांस्कृतिक भूमिकाओं और सामाजिक स्थिति पर विचार किया गया है।[4] यह अध्ययन इस बात को समझने में सहायता करता है कि किन्नर समुदाय को केवल जैविक स्त्री–पुरुष के द्विभाजन के आधार पर समझना पर्याप्त नहीं है।

इसी क्रम में गायत्री रेड्डी (Gayatri Reddy) ने अपनी पुस्तक With Respect to Sex: Negotiating Hijra Identity in South India में दक्षिण भारत के हिजड़ा समुदाय के जीवन का विस्तृत अध्ययन किया है। उनके अध्ययन में किन्नर समुदाय की पहचान के साथ सम्मान, सामाजिक संबंध, समुदाय, परिवार और रोजमर्रा के जीवन से जुड़े प्रश्न महत्त्वपूर्ण रूप से सामने आते हैं।[5] इससे स्पष्ट होता है कि किन्नर अस्मिता का प्रश्न केवल लैंगिक पहचान तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक स्वीकृति और सम्मान से भी गहराई से जुड़ा हुआ है।

किन्नर विमर्श का मूल उद्देश्य किन्नर व्यक्ति को दया, उपहास या कौतूहल की वस्तु मानने के बजाय उसे एक स्वतंत्र मानवीय अस्तित्व के रूप में समझना है। इस दृष्टि से अस्मिता का अर्थ अपनी पहचान और अस्तित्व की स्वीकृति से है, जबकि सामाजिक बहिष्करण उस स्थिति

को प्रकट करता है जिसमें किसी व्यक्ति या समुदाय को समाज के सामान्य अवसरों, संबंधों और सम्मान से दूर रखा जाता है। किन्नर समुदाय के संदर्भ में ये दोनों प्रश्न एक–दूसरे से जुड़े हुए दिखाई देते हैं।

भारतीय कानून में भी 'किन्नर' को ट्रांसजेंडर व्यक्ति की परिभाषा के अंतर्गत स्पष्ट रूप से शामिल किया गया है। Transgender Persons (Protection of Rights) Act, 2019 की धारा 2(k) में 'transgender person' की परिभाषा में हिजड़ा और किन्नर जैसी सामाजिक–सांस्कृतिक पहचान वाले व्यक्तियों को सम्मिलित किया गया है।[6] इसलिए किन्नर विमर्श को केवल लैंगिक भिन्नता की चर्चा न मानकर अस्मिता, समानता, सामाजिक स्वीकृति और मानवीय गरिमा के विमर्श के रूप में देखना अधिक उचित है। यही दृष्टि 'पाराइसचित' में चित्रित किन्नर पात्रों और उनके सामाजिक संघर्ष को समझने का आधार प्रदान करती है।

3. पंचपरगनिया कहानी साहित्य और 'पाराइसचित' का साहित्यिक संदर्भ

पंचपरगनिया साहित्य की आधुनिक विधाओं में कहानी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस विधा के माध्यम से स्थानीय समाज, परिवार, ग्रामीण जीवन, लोकविश्वास, बदलती सामाजिक स्थितियों तथा मानवीय संबंधों के विविध पक्षों को अभिव्यक्ति मिली है। उपलब्ध आधुनिक पंचपरगनिया कहानियों में सामाजिक जीवन और मानवीय अनुभवों से जुड़े अनेक प्रसंग सामने आते हैं। इसी साहित्यिक परंपरा में संतोष साहु 'प्रीतम' का कहानी–संग्रह चिती साँप उल्लेखनीय है।

चिती साँप आधुनिक पंचपरगनिया कहानियों का संग्रह है। इसका प्रथम संस्करण वर्ष 2014 में झारखण्ड झरोखा, राँची से प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में विभिन्न सामाजिक विषयों से संबंधित कहानियाँ संकलित हैं। 'पाराइसचित' इसी संग्रह की तीसरी कहानी है और पुस्तक के पृष्ठ 25 से 36 तक प्रकाशित है।[7] कहानी का परिवेश ग्रामीण समाज से जुड़ा हुआ है और इसकी कथा किन्नर समुदाय के जीवन तथा समाज के साथ उनके संबंधों को केंद्र में रखती है।

'पाराइसचित' की विशेषता यह है कि इसमें किन्नर पात्र कथा के किनारे उपस्थित पात्र नहीं हैं, बल्कि कहानी की मूल संवेदना उन्हीं के जीवन से निर्मित होती है। चंपा, चमेली, तारा और कमला कहानी के प्रमुख किन्नर पात्र हैं। इनमें चंपा कथा के केंद्र में है, किंतु उसके साथ अन्य तीन पात्रों की उपस्थिति किन्नर समुदाय के सामूहिक जीवन और आपसी संबंधों को भी सामने लाती है। इस कारण कहानी को केवल एक व्यक्ति की जीवन–कथा के रूप में नहीं, बल्कि किन्नर समुदाय की सामाजिक स्थिति और सामूहिक अनुभवों के संदर्भ में भी पढ़ा जा सकता है।

कहानी में किन्नर जीवन से जुड़े अनेक प्रश्न क्रमशः उभरते हैं—उनकी आजीविका, सामाजिक व्यवहार, समाज की दृष्टि, सामुदायिक संबंध और मृत्यु के बाद मानवीय गरिमा का प्रश्न। विशेष रूप से चंपा की मृत्यु के बाद उत्पन्न परिस्थितियाँ कहानी को एक गहरे सामाजिक

प्रश्न से जोड़ देती हैं। यही प्रसंग 'पाराइसचित' को किन्नर अस्मिता और सामाजिक बहिष्करण के अध्ययन की दृष्टि से विशेष महत्त्व प्रदान करता है।

4. 'पाराइसचित' : कथावस्तु एवं कथा–परिवेश

संतोष साहु 'प्रीतम' की कहानी 'पाराइसचित' का कथा–परिवेश नावाडी नामक गाँव और उसके आसपास का क्षेत्र है। गाँव के बाहर आसन के पेड़ के पास एक झोपड़ी में चंपा, चमेली, तारा और कमला नामक चार किन्नर साथ रहते हैं। वे गाँव तथा आसपास के क्षेत्रों में लगने वाले साप्ताहिक हाट–बाजारों में जाकर नाच–गाकर अपना जीवन–यापन करते हैं। उनके नाच–गान को देखने के लिए लोगों की भीड़ भी लगती है। इस प्रकार कहानी के आरंभ में ही इन चारों पात्रों के निवास, आजीविका और ग्रामीण समाज से उनके संपर्क का परिचय मिलता है।[8]

चंपा इन चारों में उम्र में बड़ी है। लगभग पचास वर्ष की अवस्था में उसका स्वास्थ्य धीरे–धीरे खराब होने लगता है। लगभग तीन महीने तक बीमारी से जूझने के दौरान उसे बुखार, शारीरिक कमजोरी, खाँसी और प्यास जैसी समस्याएँ होती हैं। सरकारी अस्पताल से मिली दवा से लाभ नहीं होने पर उसका अन्य उपचार भी कराया जाता है। स्थिति में सुधार न होने पर उसे राँची के बड़े अस्पताल में ले जाने की सलाह दी जाती है, किंतु ऐसा संभव नहीं हो पाता। कुछ समय बाद चंपा की मृत्यु हो जाती है। उसके अंतिम समय में चमेली, तारा और कमला उसके साथ रहते हैं।[9]

चंपा की मृत्यु के बाद कहानी का घटनाक्रम उसके अंतिम संस्कार की ओर बढ़ता है। चमेली, तारा और कमला उसके शव को लेकर गाँव के बाहर नदी की ओर जाते हैं तथा अंतिम संस्कार की तैयारी करते हैं। चंपा को दफनाने के लिए जब वे पंचायत के मुरदार घाट पर पहुँचते हैं, तब घाटवार उन्हें वहाँ शव दफनाने से रोक देता है। इस पर उनके और घाटवार के बीच विवाद की स्थिति उत्पन्न होती। चमेली इसका विरोध करती है और किन्नरों की मनुष्यता का प्रश्न उठाती है।[10] इसके बाद तीनों चंपा के शव को दफनाने के लिए पंचायत और गाँव के लोगों से सहायता तथा अनुमति प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

पंचायत और गाँव के प्रभावशाली लोगों से भी समस्या का समाधान नहीं हो पाता। फलतः चमेली, तारा और कमला चंपा के शव के साथ नदी किनारे प्रतीक्षा करते रहते हैं। समय बीतने के साथ शव खराब होने लगता है। धूप, भूख और कठिन परिस्थितियों के बावजूद तीनों अपने साथी के शव को छोड़कर नहीं जाते और उसे दफनाने के लिए स्थान मिलने की प्रतीक्षा करते रहते हैं। इसी दौरान वहाँ आने–जाने वाले कुछ लोगों से उनकी बातचीत होती है और चंपा के अंतिम संस्कार की समस्या गाँव के लोगों के सामने भी आती है।[11][1] [1]

कहानी में नया मोड़ तब आता है जब एक वृद्ध महिला उनकी स्थिति के बारे में जानती है। तीनों उससे अपनी समस्या बताते हैं। वृद्धा उनकी बात सुनने के बाद अपनी जमीन पर चंपा को दफनाने की अनुमति देती है। इसके बाद चमेली, तारा और कमला चंपा के लिए कब्र तैयार

करते हैं और उसे सम्मानपूर्वक दफनाते हैं। कब्र के ऊपर मिट्टी की बेदी बनाई जाती है और फूल भी चढ़ाए जाते हैं। इसी प्रसंग में वृद्धा और किन्नर पात्रों के संवाद के माध्यम से किन्नर जीवन, पाप, पूर्वजन्म और 'पाराइसचित' से संबंधित प्रचलित धारणाओं की चर्चा भी सामने आती है।[12] [1] [2]

चंपा को दफनाने के बाद चमेली, तारा और कमला उसकी स्मृति में नाचते–गाते हैं। धीरे–धीरे गाँव के लोग भी वहाँ एकत्र होते हैं और उनकी भावनाओं तथा चंपा के प्रति उनके लगाव को देखते हैं। कहानी के अंतिम भाग में गीत और कविता के माध्यम से मृत्यु, प्रेम तथा जीवन से जुड़े भाव व्यक्त होते हैं। इसी क्रम में पंक्तियाँ आती हैं–"इस जगह प्यार करना मना है, प्यार गर हो भी जाए किसी से, उसका इजहार करना मना है।"[13] कथा के अंत में वृद्ध महिला भावुक होकर चंपा की कब्र के प्रति श्रद्धा व्यक्त करती है और अगले दिन अपनी झोपड़ी में प्रार्थना करती है। इसी वातावरण में कहानी समाप्त होती है।

5. 'पाराइसचित' के किन्नर पात्र : चंपा, चमेली, तारा और कमला

'पाराइसचित' में चंपा, चमेली, तारा और कमला चार प्रमुख किन्नर पात्र हैं। इन चारों के माध्यम से कहानी किन्नर समुदाय के जीवन के विभिन्न पक्षों को सामने लाती है। ये नावाडी गाँव के बाहर एक झोपड़ी में साथ रहते हैं और नाच–गाकर अपनी आजीविका चलाते हैं। उनका निवास गाँव की मुख्य बस्ती से बाहर है, किंतु आजीविका और सामाजिक संपर्क के लिए वे उसी ग्रामीण समाज से जुड़े रहते हैं।[14] चारों पात्रों का साथ रहना उनके बीच की सामुदायिकता और पारस्परिक संबंध को भी प्रकट करता है। इनमें चंपा कथा के केंद्र में है, जबकि चमेली, तारा और कमला उसके साथ सामूहिक जीवन, आत्मीयता और सहयोग के पक्ष को उभारती हैं।

चंपा : कथा की केंद्रीय किन्नर पात्र

चंपा चारों में उम्र में बड़ी है और कहानी की अधिकांश घटनाएँ उसके जीवन और मृत्यु के आसपास विकसित होती हैं। उसका नाचना–गाना उसकी आजीविका के साथ उसके सामाजिक जीवन का भी हिस्सा है। चंपा के चरित्र का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष उसकी व्यक्तिगत इच्छाओं और भावनाओं से सामने आता है। कहानी में वह अपने साथियों के सामने "मएँ बाउल बनेक चाहत रहँ" जैसी इच्छा व्यक्त करती है।[15] इस कथन से उसके भीतर गृहस्थ अथवा दांपत्य जीवन से जुड़ने की आकांक्षा का संकेत मिलता है। यह प्रसंग चंपा को केवल एक किन्नर पात्र के रूप में नहीं, बल्कि अपनी इच्छाओं, अभावों और भावनाओं वाले मनुष्य के रूप में सामने लाता है।

चंपा का चरित्र उसकी बीमारी और मृत्यु के प्रसंग से और अधिक संवेदनशील बनता है। बीमारी के समय चमेली, तारा और कमला उसके साथ रहते हैं और मृत्यु के बाद भी उसके प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं। चंपा स्वयं मृत्यु के बाद सक्रिय पात्र नहीं रहती, किंतु उसके शव के अंतिम संस्कार को लेकर उत्पन्न परिस्थितियाँ कथा के आगे के घटनाक्रम का आधार बनती हैं।[16] इस प्रकार चंपा का चरित्र कहानी में व्यक्तिगत जीवनानुभव के साथ उस सामाजिक स्थिति

का भी केंद्र बन जाता है, जिसके माध्यम से किन्नर व्यक्ति की स्वीकृति और सम्मान से जुड़े प्रश्न उभरते हैं।

चमेली, तारा और कमला : सामुदायिकता और आत्मीयता

चमेली, तारा और कमला के चरित्रों की प्रमुख विशेषता चंपा के प्रति उनकी आत्मीयता और जिम्मेदारी है। चंपा की बीमारी के समय उसका साथ देने से लेकर उसकी मृत्यु के बाद उसे सम्मानपूर्वक दफनाने के प्रयास तक तीनों लगातार उसके साथ बनी रहती हैं। कठिन परिस्थितियों में भी वे चंपा के शव को छोड़कर नहीं जातीं।[17] इससे उनके पारस्परिक संबंध की गहराई तथा समुदाय के भीतर मौजूद सहयोग और आत्मीयता सामने आती है।

इन तीनों में चमेली का चरित्र अपेक्षाकृत अधिक मुखर दिखाई देता है। मुरदार घाट पर चंपा के शव को दफनाने से रोके जाने पर वह घाटवार के सामने प्रश्न उठाती है।[18] उसका प्रतिरोध यह संकेत देता है कि वह परिस्थितियों को चुपचाप स्वीकार करने वाली पात्र नहीं है, बल्कि अपने समुदाय के सम्मान के लिए आवाज उठाती है। इस कारण चमेली का चरित्र कहानी में प्रतिरोध और आत्मसम्मान के स्वर को प्रमुखता प्रदान करता है।

तारा और कमला के चरित्र चमेली की तुलना में कम मुखर हैं, किंतु उनकी भूमिका कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। वे चंपा की बीमारी, मृत्यु और अंतिम संस्कार की पूरी प्रक्रिया में उसके साथ बनी रहती हैं। उनका साथ यह दर्शाता है कि सामाजिक कठिनाइयों के बीच चारों किन्नरों के संबंध केवल साथ रहने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उनमें पारिवारिक आत्मीयता जैसी निकटता भी है। इस प्रकार चंपा, चमेली, तारा और कमला के माध्यम से 'पाराइसचित' किन्नर जीवन के व्यक्तिगत और सामुदायिक दोनों पक्षों को सामने लाती है। चंपा व्यक्तिगत इच्छाओं और जीवनानुभवों की प्रतिनिधि बनती है, चमेली प्रतिरोध और आत्मसम्मान का स्वर प्रस्तुत करती है, जबकि तारा और कमला साथ, सहयोग और सामुदायिक आत्मीयता को अभिव्यक्त करती हैं।

6. किन्नर अस्मिता, जीवन–संघर्ष और सामाजिक बहिष्करण

'पाराइसचित' में किन्नर जीवन का चित्रण केवल चार पात्रों की व्यक्तिगत कथा तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके माध्यम से अस्मिता, जीवन–संघर्ष और सामाजिक बहिष्करण के प्रश्न भी उभरते हैं। कहानी के आरंभ में चंपा, चमेली, तारा और कमला का गाँव की मुख्य बस्ती से बाहर रहना उल्लेखनीय है।[19] एक ओर वे हाट–बाजारों में नाच–गाकर ग्रामीण समाज के संपर्क में रहते हैं, दूसरी ओर उनका निवास गाँव के बाहर है। इस स्थिति को उनके सामाजिक जीवन की विडंबना के रूप में देखा जा सकता है–समाज उनकी उपस्थिति और कला से परिचित है, फिर भी सामाजिक निकटता और समान स्वीकार्यता का अभाव बना रहता है।

अस्मिता और मानवीय पहचान का प्रश्न

कहानी में किन्नर अस्मिता का सबसे प्रभावशाली स्वर चमेली के माध्यम से सामने आता है। चंपा के शव को मुरदार घाट पर दफनाने से रोके जाने पर उसका प्रश्न–''हामरउ त' इनसान हेकी, इंसान केर लास लेकन कहाँ–कहाँ जाबिक?''[20] किन्नर अस्मिता को सीधे मनुष्यता के प्रश्न

से जोड़ देता है। चमेली यहाँ किसी विशेष सुविधा की माँग नहीं करती, बल्कि मनुष्य के रूप में समान व्यवहार की अपेक्षा व्यक्त करती है। इस दृष्टि से उसका प्रश्न केवल चंपा के अंतिम संस्कार से संबंधित नहीं रह जाता, बल्कि उस सामाजिक दृष्टि पर प्रश्न करता है जिसमें लैंगिक भिन्नता के कारण किसी व्यक्ति की मानवीय पहचान को समान रूप से स्वीकार नहीं किया जाता।

अस्मिता का दूसरा पक्ष चंपा की व्यक्तिगत आकांक्षाओं में दिखाई देता है। उसके कथन से गृहस्थ अथवा दांपत्य जीवन से जुड़ने की इच्छा का संकेत मिलता है।[21] यह प्रसंग बताता है कि किन्नर पात्र के जीवन में भी प्रेम, साथ और आत्मीय संबंधों की आकांक्षाएँ मौजूद हैं। कहानी इस प्रकार चंपा को केवल उसकी लैंगिक पहचान के आधार पर नहीं, बल्कि इच्छाओं और भावनाओं से युक्त मनुष्य के रूप में प्रस्तुत करती है।

जीवन–संघर्ष और सामुदायिक सहारा

चंपा और उसके साथियों के जीवन–संघर्ष का एक पक्ष उनकी आजीविका से जुड़ा है। नाचना–गाना उनके जीवन–यापन का प्रमुख साधन है। चंपा की बीमारी इस संघर्ष को एक अन्य स्तर पर सामने लाती है। सरकारी अस्पताल से मिली दवा से लाभ नहीं होता और बाद में उसे राँची के बड़े अस्पताल में ले जाने की सलाह दी जाती है, किंतु ऐसा संभव नहीं हो पाता।[22] इस प्रसंग से उपचार प्राप्त करने में आने वाली व्यावहारिक कठिनाइयाँ सामने आती हैं। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि कहानी चंपा की बीमारी को केवल व्यक्तिगत घटना के रूप में नहीं छोड़ती, इसके बाद की परिस्थितियाँ उसके जीवन की असुरक्षा को और अधिक स्पष्ट करती हैं।

इन कठिनाइयों के बीच चमेली, तारा और कमला का साथ सामुदायिक सहारे का रूप ग्रहण करता है। वे बीमारी से लेकर मृत्यु के बाद तक चंपा के साथ बनी रहती हैं और उसके अंतिम संस्कार की जिम्मेदारी भी उठाती हैं।[23] इस व्यवहार से उनके बीच का संबंध केवल साथ रहने वाले व्यक्तियों का संबंध नहीं रह जाता, बल्कि उसमें आत्मीयता, जिम्मेदारी और पारस्परिक सहयोग दिखाई देता है। कहानी में यह सामुदायिक संबंध कठिन परिस्थितियों का सामना करने की उनकी प्रमुख शक्ति के रूप में उभरता है।

सामाजिक बहिष्करण की चरम स्थिति

सामाजिक बहिष्करण का सबसे तीखा रूप चंपा की मृत्यु के बाद सामने आता है। उसके शव को मुरदार घाट पर दफनाने से रोक दिया जाता है और पंचायत तथा गाँव के प्रभावशाली लोगों से सहायता प्राप्त करने का प्रयास भी समस्या का समाधान नहीं कर पाता।[24] यहाँ बहिष्करण केवल सामाजिक दूरी तक सीमित नहीं रहता, बल्कि मृत्यु के बाद सम्मानजनक विदाई से जुड़े प्रश्न तक पहुँच जाता है।

इस स्थिति की गंभीरता तब और बढ़ती है जब चमेली, तारा और कमला चंपा के शव के साथ नदी किनारे प्रतीक्षा करने के लिए विवश होती हैं और समय बीतने के साथ शव खराब

होने लगता है।[25] यह प्रसंग सामाजिक बहिष्करण को अत्यंत मार्मिक रूप प्रदान करता है। कहानी यहाँ पाठक के सामने यह प्रश्न उपस्थित करती है कि यदि किसी व्यक्ति के प्रति भेदभाव मृत्यु के बाद भी समाप्त नहीं होता, तो सामाजिक समानता और मानवीय स्वीकृति का वास्तविक स्वरूप क्या होना चाहिए।

इसी परिस्थिति में वृद्ध महिला का हस्तक्षेप एक भिन्न सामाजिक दृष्टि को सामने लाता है। वह किन्नरों के प्रति प्रचलित नकारात्मक धारणाओं पर प्रश्न उठाती है और चंपा को दफनाने के लिए स्थान उपलब्ध कराती है।[26] उसका व्यवहार उस सामूहिक अस्वीकार के विपरीत मानवीय संवेदना और स्वीकार्यता का उदाहरण प्रस्तुत करता है, जिसका सामना तीनों किन्नर पात्र अब तक करते आए थे। इस प्रकार 'पाराइसचित' में सामाजिक बहिष्करण केवल बाहरी व्यवस्था या स्थान की समस्या नहीं रह जाता, बल्कि वह सामाजिक दृष्टि और मानसिकता से जुड़ा प्रश्न बनकर सामने आता है।

7. मृत्यु, अंतिम संस्कार और मानवीय गरिमा का प्रश्न

'पाराइसचित' में चंपा की मृत्यु कथा को एक ऐसे प्रश्न की ओर ले जाती है, जहाँ किन्नर व्यक्ति की मानवीय गरिमा का प्रश्न विशेष रूप से उभरता है। जीवित अवस्था में सामाजिक दूरी का सामना करने वाली चंपा को मृत्यु के बाद भी सहज रूप से अंतिम संस्कार का स्थान नहीं मिल पाता। चमेली, तारा और कमला उसे सम्मानपूर्वक दफनाना चाहते हैं, किंतु गाँव के मुरदार घाट पर ऐसा करने से उन्हें रोक दिया जाता है।[27] इस प्रकार मृत्यु के बाद भी चंपा की किन्नर पहचान उसके प्रति किए जाने वाले सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करती दिखाई देती है।

मुरदार घाट का प्रसंग इस दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है। यहाँ प्रश्न केवल किसी निश्चित स्थान पर शव दफनाने का नहीं है, बल्कि यह इस बात से जुड़ जाता है कि क्या मृत्यु के बाद प्रत्येक व्यक्ति समान सम्मान का अधिकारी है। चमेली द्वारा उठाया गया मनुष्यता का प्रश्न इसी स्थिति के विरोध से उत्पन्न होता है।[28] वह चंपा के लिए किसी विशेष अधिकार की अपेक्षा नहीं करती, बल्कि उसके लिए वही मानवीय सम्मान चाहती है जो किसी अन्य मृत व्यक्ति को प्राप्त होता है। इस प्रकार अंतिम संस्कार का प्रसंग कहानी में मानवीय गरिमा के प्रश्न का आधार बन जाता है।

यह प्रश्न तब और गंभीर हो जाता है जब पंचायत और गाँव के लोगों से भी समस्या का समाधान नहीं निकलता। चमेली, तारा और कमला को चंपा के शव के साथ नदी किनारे प्रतीक्षा करनी पड़ती है और समय बीतने के साथ शव खराब होने लगता है।[29] इस स्थिति में तीनों का चंपा के साथ बने रहना एक ओर उनके पारस्परिक लगाव और जिम्मेदारी को व्यक्त करता है, तो दूसरी ओर शव को दफनाने के लिए स्थान न मिलना सामाजिक अस्वीकार की गंभीरता को सामने लाता है। यहाँ मृत शरीर के सम्मान का प्रश्न भी सामाजिक पहचान से जुड़ जाता है।

कथा में इस स्थिति का समाधान वृद्ध महिला के हस्तक्षेप से निकलता है। तीनों की समस्या जानने के बाद वह अपनी जमीन पर चंपा को दफनाने की अनुमति देती है। इस प्रसंग

में उसका कथन–''इ बरगाछ टा पास लेक उ पखइर केर आखरी सीमा तक सउब मर जमीन हेके। पखइर धारे लास टाके तइप देवा, केउ कन' नाइं कहबएँ।"[30] –विशेष अर्थ रखता है। उसके लिए धरती पर बनाई गई सामाजिक और मानवीय सीमाओं से अधिक महत्त्व एक मृत व्यक्ति को अंतिम स्थान देने का है। इस दृष्टि से वृद्धा का व्यवहार उस सामाजिक अस्वीकार के विपरीत खड़ा होता है जिसका सामना चंपा के साथियों को करना पड़ा था।

चंपा को दफनाने की अनुमति मिलना इसलिए केवल कथा की समस्या का व्यावहारिक समाधान नहीं है। यह उस मानवीय संवेदना को भी सामने लाता है जिसमें व्यक्ति की लैंगिक पहचान से पहले उसकी मनुष्यता को महत्त्व दिया जाता है। वृद्ध महिला का व्यवहार बताता है कि सामाजिक रूढ़ियों के बीच व्यक्तिगत संवेदना और मानवीय दृष्टि एक अलग रास्ता प्रस्तुत कर सकती है।[31] चंपा का सम्मानपूर्वक दफनाया जाना इसी परिवर्तन का महत्त्वपूर्ण बिंदु बनता है।

इस प्रकार 'पाराइसचित' में मृत्यु और अंतिम संस्कार का प्रसंग किन्नर जीवन से जुड़े मानवीय गरिमा के प्रश्न को गंभीरता से सामने लाता है। चंपा के शव को मुरदार घाट पर स्थान न मिलना सामाजिक अस्वीकार को दर्शाता है, जबकि वृद्ध महिला द्वारा उसे अपनी भूमि पर दफनाने की अनुमति देना मानवीय संवेदना और स्वीकार्यता का पक्ष प्रस्तुत करता है। कहानी इस विरोध के माध्यम से संकेत करती है कि मानवीय गरिमा केवल जीवन तक सीमित नहीं है–मृत्यु के बाद भी प्रत्येक व्यक्ति सम्मान का अधिकारी है।

8. 'पाराइसचित' शीर्षक की सार्थकता और सामाजिक परिवर्तन की चेतना

'पाराइसचित' शीर्षक कहानी के मूल कथ्य से गहराई से जुड़ा हुआ है। इसका आशय 'प्रायश्चित' से है, किंतु कहानी में यह केवल पाप से मुक्ति के धार्मिक अर्थ तक सीमित नहीं रहता। कथा के अंतिम भाग में पूर्वजन्म, पाप और प्रायश्चित से जुड़ी मान्यताओं के माध्यम से किन्नर जन्म को लेकर समाज में प्रचलित धारणाओं पर प्रश्न उठाया गया है।[32][2]

वृद्ध महिला के संवाद से कहानी को एक महत्त्वपूर्ण वैचारिक दिशा मिलती है। वह किन्नर को सामाजिक बीमारी मानने वाली धारणा पर प्रश्न उठाती है और उसके अस्तित्व को सृष्टि की स्वाभाविक विविधता के रूप में देखने का संकेत देती है। इस दृष्टि से कहानी किन्नर व्यक्ति को दोषी ठहराने के बजाय उसके प्रति बनी सामाजिक मानसिकता को प्रश्नों के घेरे में लाती है।

यहीं 'पाराइसचित' शीर्षक का अर्थ व्यापक हो जाता है। कथा में प्रायश्चित की चर्चा पूर्वजन्म और पाप–पुण्य की मान्यताओं के संदर्भ में आती है, किंतु कहानी के समग्र विश्लेषण से एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उभरता है–**वास्तव में प्रायश्चित की आवश्यकता किसे है–किन्नर व्यक्ति को, अथवा उस समाज को जो उसे समान मनुष्य के रूप में स्वीकार नहीं करता?** यह प्रश्न कहानी का प्रत्यक्ष कथन नहीं, बल्कि उसके घटनाक्रम से उभरने वाला एक वैचारिक संकेत है। इस

अर्थ में 'पाराइसचित' समाज को अपनी रूढ़िगत धारणाओं के आत्मपरीक्षण की ओर ले जाने वाला शीर्षक बन जाता है।

कहानी के अंतिम भाग में सामाजिक दृष्टि में परिवर्तन का संकेत भी मिलता है। चंपा को दफनाने के बाद चमेली, तारा और कमला उसकी स्मृति में नाचते–गाते हैं। उनकी भावनाओं को देखकर वहाँ उपस्थित लोगों के व्यवहार में भी बदलाव दिखाई देता है।[33] यह परिवर्तन किन्नर पात्रों के दुःख और आत्मीयता को निकट से देखने के बाद उत्पन्न होता है। इस प्रकार कहानी मानवीय संवेदना को सामाजिक दूरी कम करने वाले माध्यम के रूप में प्रस्तुत करती है।

कथा के अंत में प्रस्तुत गीत की पंक्तियाँ–"इस जगह प्यार करना मना है, प्यार गर हो भी जाए किसी से, उसका इजहार करना मना है"[34]–कहानी की संवेदना को व्यापक मानवीय अर्थ प्रदान करती हैं। ये पंक्तियाँ प्रेम और उसकी सामाजिक अस्वीकृति के प्रश्न को सामने लाती हैं।

इस प्रकार 'पाराइसचित' शीर्षक पाप और प्रायश्चित से जुड़ी रूढ़ मान्यताओं को सामने लाते हुए सामाजिक आत्मचिंतन की ओर संकेत करता है। कहानी का अंत केवल चंपा की मृत्यु और पीड़ा पर नहीं रुकता, बल्कि मानवीय संवेदना और सामाजिक स्वीकार्यता की संभावना भी प्रस्तुत करता है। इस दृष्टि से 'पाराइसचित' को **किन्नर व्यक्ति के प्रायश्चित से अधिक समाज की भेदभावपूर्ण मानसिकता के आत्मपरीक्षण और परिवर्तन से जोड़कर देखा जा सकता है।**

9. निष्कर्ष

संतोष साहु 'प्रीतम' की 'पाराइसचित' किन्नर जीवन से जुड़े अस्मिता, संघर्ष और सामाजिक बहिष्करण के प्रश्नों को मानवीय दृष्टि से सामने लाती है। चंपा, चमेली, तारा और कमला के माध्यम से कहानी किन्नर पात्रों के प्रेम, आत्मीयता, पारस्परिक सहयोग और सम्मानपूर्ण जीवन की आकांक्षा को अभिव्यक्त करती है। इस प्रकार किन्नर पात्र यहाँ केवल उनकी प्रचलित सामाजिक छवि तक सीमित न रहकर संवेदनशील मनुष्य के रूप में सामने आते हैं।

चंपा की मृत्यु और उसके अंतिम संस्कार से जुड़ी घटनाएँ सामाजिक बहिष्करण की गंभीरता को उजागर करती हैं। वहीं चमेली, तारा और कमला का चंपा के प्रति लगाव सामुदायिक आत्मीयता और जिम्मेदारी को व्यक्त करता है। विशेष रूप से चमेली द्वारा उठाया गया मनुष्यता का प्रश्न किन्नर अस्मिता को समानता और मानवीय गरिमा के व्यापक प्रश्न से जोड़ता है।

कहानी में वृद्ध महिला का हस्तक्षेप रूढ़िगत सामाजिक सोच के विपरीत संवेदना और स्वीकार्यता की संभावना प्रस्तुत करता है। इसी संदर्भ में 'पाराइसचित' शीर्षक भी व्यापक अर्थ ग्रहण करता है। इसे केवल पाप के प्रायश्चित तक सीमित न मानकर उस सामाजिक मानसिकता के आत्मपरीक्षण से जोड़कर देखा जा सकता है, जो लैंगिक भिन्नता के आधार पर मनुष्य के साथ भेदभाव करती है। इस दृष्टि से 'पाराइसचित' **किन्नर समुदाय की समानता, सामाजिक स्वीकार्यता और मानवीय गरिमा की आवश्यकता को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करने वाली कहानी के रूप में सामने आती है।**

टिप्पणियाँ एवं संदर्भः

[1] Supreme Court of India. *National Legal Services Authority v. Union of India & Others*, Writ Petition (Civil) No. 400 of 2012, Judgment dated 15 April 2014.

[2] Government of India. *The Transgender Persons (Protection of Rights) Act, 2019*, Act No. 40 of 2019, Sec. 3, Legislative Department, Ministry of Law and Justice.

[3] संतोष साहु 'प्रीतम', *चिती साँप (आधुनिक पाँचपरगनिया कहानी)*। प्रथम संस्करण, झारखण्ड झरोखा, राँची, 2014, पृ. 25–36।

[4] Nanda, Serena. *Neither Man Nor Woman: The Hijras of India*. Wadsworth Publishing Company, 1990.

[5] Reddy, Gayatri. *With Respect to Sex: Negotiating Hijra Identity in South India*. University of Chicago Press, 2005.

[6] Government of India, *The Transgender Persons (Protection of Rights) Act, 2019*, Sec. 2(k).

[7] संतोष साहु 'प्रीतम', *चिती साँप (आधुनिक पाँचपरगनिया कहानी)*, प्रथम संस्करण, झारखण्ड झरोखा, राँची, 2014, पृ. 25–36।

[8] वही, पृ. 25–26।

[9] वही, पृ. 26।

[10] वही, पृ. 27–29।

[11] वही, पृ. 29–32।

[12] वही, पृ. 33–34।

[13] वही, पृ. 35–36।

[14] वही, पृ. 25।

[15] वही, पृ. 28।

[16] वही, पृ. 26–30।

[17] वही, पृ. 26–32।

[18] वही, पृ. 29।

[19] वही, पृ. 25।

[20] वही, पृ. 29।

[21] वही, पृ. 28।

[22] वही, पृ. 26।

[23] वही, पृ. 27–32।

[24] वही, पृ. 28–30।

[25] वही, पृ. 30–32।

[26] वही, पृ. 33–34।

[27] वही, पृ. 27–29।

[28] वही, पृ. 29।

[29] वही, पृ. 30–32।

[30] वही, पृ. 33।

[31] वही, पृ. 33–34।

[32] वही, पृ. 33–34।

[33] वही, पृ. 35।

[34] वही, पृ. 36।

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

RESEARCH GATEWAY

AROGYAM ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM